

डॉ. गैरी येट्स, 12 की पुस्तक, सत्र 25, हबक्कूक

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनकी व्याख्यान श्रृंखला है। यह हबक्कूक की पुस्तक पर व्याख्यान 25 है।

इस वर्तमान खंड में हमारा ध्यान हबक्कूक की पुस्तक पर होगा।

12 की पुस्तक में, हबक्कूक का संदेश और सपन्याह का संदेश विशेष रूप से एक दूसरे के पूरक हैं क्योंकि इन दोनों पुस्तकों और इन दोनों भविष्यवक्ताओं की सेवकाई ने लोगों को तैयार करने और बेबीलोनियों के हाथों आने वाले न्याय के बारे में लोगों को चेतावनी देने पर ध्यान केंद्रित किया। हालाँकि, दिलचस्प बात यह है कि सपन्याह और हबक्कूक इस विषय पर पूरी तरह से अलग-अलग तरीकों से विचार करते हैं। हमने पिछले भाग में सपन्याह के संदेश को देखा और सपन्याह प्रभु के आने वाले दिन की चेतावनी देता है।

प्रभु यही कहते हैं, लोगों को तैयार करते हैं, उन्हें पश्चाताप के लिए बुलाते हैं। हबक्कूक बेबीलोन के संकट के बारे में ज़्यादा बात करते हैं, जो विश्वास का एक व्यक्तिगत संकट प्रतीत होता है। प्रभु भविष्यवक्ता के साथ बातचीत के ज़रिए यहूदा के लोगों को भविष्य का खुलासा और खुलासा करते हैं।

यहाँ पर जो कुछ भी भविष्यसूचक साहित्य के रूप में है, जैसे कि भविष्यवक्ता परमेश्वर के साथ आगे-पीछे संवाद करता है, वह मुझे कई मायनों में यिर्मयाह के स्वीकारोक्ति की याद दिलाता है। जहाँ यिर्मयाह अपने मंत्रालय और अपने जीवन में चल रही परिस्थितियों और स्थितियों पर विलाप करेगा, तब यहोवा उसे जवाब देगा और उससे उन दोनों बातों के बारे में बात करेगा जो उसके साथ व्यक्तिगत रूप से घटित होंगी और यहूदा राष्ट्र के लोगों के संदर्भ में परमेश्वर क्या योजना बना रहा है और क्या करने का इरादा रखता है।

हमारे यहाँ भी यही होता है। परमेश्वर की योजनाओं और परमेश्वर के इरादों और अपने समय की ऐतिहासिक परिस्थितियों में उसके काम करने के तरीके के संदर्भ में हबक्कूक जिस विश्वास के संकट से गुज़र रहा है, उसके ज़रिए परमेश्वर अंततः लोगों को अपनी योजनाओं के बारे में बताता है, उन्हें तैयार करता है, और उन्हें उस न्याय के बारे में चेतावनी देता है जो उनके पास आने वाला है। जैसा कि यिर्मयाह और हबक्कूक इस तरह से परमेश्वर से बातचीत कर रहे हैं, मुझे लगता है कि यह हमारे लिए प्रार्थना की समृद्ध भाषा और प्रार्थना के उदाहरणों और उदाहरणों को दर्शाता है।

हम इनमें से कुछ के बारे में बात करेंगे, लेकिन यह हमें भविष्यवक्ताओं द्वारा निभाई गई कठिन भूमिका की भी याद दिलाता है क्योंकि वे आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दे रहे थे, लेकिन साथ ही अपने जीवन में न्याय के विनाशकारी प्रभावों का अनुभव भी कर रहे थे क्योंकि परमेश्वर

उन पर न्याय ला रहा था। उन्होंने वास्तव में वही किया जिसे हम अवतार मंत्रालय कहेंगे क्योंकि उन्होंने अपने जीवन और अपनी स्थिति और परिस्थितियों में, परमेश्वर द्वारा उन पर लाए जा रहे न्याय की परिस्थितियों का अनुभव किया, और परमेश्वर ने उन्हें इस विशिष्ट भूमिका के लिए बुलाया। विशेष रूप से इस पुस्तक में हबक्कूक और परमेश्वर के बीच होने वाले संवाद और यिर्मयाह और उसके स्वीकारोक्ति में प्रभु के बीच होने वाले संवाद में, हम समझते हैं कि भविष्यवक्ताओं की एक भूमिका है जहाँ वे दोनों लोगों के लिए परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हैं।

यह वही है जो प्रभु कहते हैं, और यहाँ प्रभु का संदेश है। लेकिन इसका उल्टा यह है कि वे परमेश्वर के सामने लोगों का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। यिर्मयाह और हबक्कूक प्रभु को पुकार रहे हैं, और वे कह रहे हैं, प्रभु, देश में रहने वाले धर्मी लोगों को याद रखें।

आपने हमसे जो वादे किए हैं, उन्हें याद रखें। देखें कि हम किस दौर से गुज़र रहे हैं, हम पर ध्यान दें और हम पर कृपा करें। इसलिए, मुझे लगता है कि वास्तविक अवतार मंत्रालय हबक्कूक और यिर्मयाह के मंत्रालय में और संघर्ष और संकट में परिलक्षित होता है, जिससे भविष्यवक्ताओं को अक्सर गुजरना पड़ता था।

हबक्कूक की सेवकाई के समय और बेबीलोन संकट के संबंध में यह सब कब हुआ, इस बारे में पुस्तक में बहुत कुछ ऐसा नहीं है जो हमें इसे विशेष रूप से पहचानने में मदद करे। मुझे लगता है कि पुस्तक में कुछ संकेत हो सकते हैं कि उसकी सेवकाई पूरे बेबीलोन संकट को कवर करने वाली है। यहाँ कुछ बातें हैं जो हमें यह सुझाव दे सकती हैं।

अध्याय 1 की आयत 5 और 6 में, जब प्रभु हबक्कूक को बेबीलोनियों को भेजने की योजना बनाने के लिए कहता है, तो यह कुछ हद तक आश्चर्यजनक तत्व प्रतीत होता है। अध्याय 1, आयत 5 और 6 में यह कहा गया है: राष्ट्रों पर दृष्टि डालो और देखो, आश्चर्य करो, और चकित हो जाओ। क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में ऐसा काम कर रहा हूँ जिसके बारे में अगर तुम बताओगे तो विश्वास नहीं करोगे।

क्योंकि देखो, मैं कसदियों को उभारने जा रहा हूँ, वे कटु और जल्दबाज़ राष्ट्र हैं, जो पृथ्वी की चौड़ाई में अपने घरों पर कब्ज़ा करने के लिए आगे बढ़ते हैं। इसलिए, यह कुछ हद तक आश्चर्यजनक तत्व है कि परमेश्वर कसदियों को न्याय के साधन के रूप में इस्तेमाल करने जा रहा है। यह सुझाव दे सकता है कि हबक्कूक की सेवकाई कम से कम बेबीलोन संकट में काफी पहले शुरू हुई थी।

शायद 627 या 626 ईसा पूर्व में नबोपोलासर द्वारा बेबीलोन की स्वतंत्रता स्थापित करने के कुछ समय बाद, या कम से कम उस समय से पहले जब बेबीलोनियों ने यहूदा पर दबाव डालना शुरू किया और 605, 597 और 586 में निर्वासन के तीन चरणों को पूरा करना शुरू किया। हालाँकि, जैसे-जैसे हम अध्याय 2 में आगे बढ़ते हैं, बेबीलोन पर एक विपत्ति घोषित की जाती है। बेबीलोन को एक दमनकारी, हिंसक राज्य के रूप में देखा जाता है जिसका न्याय परमेश्वर करने जा रहा है क्योंकि उन्होंने अपना साम्राज्य खून पर बनाया है।

इससे यह संकेत मिलता है कि हबक्कूक की सेवकाई अब, उसके संदेश में, 605 ईसा पूर्व के बाद बेबीलोनियों पर प्रतिबिंबित हो रही है। और फिर अध्याय 3 की आयत 16 से 19 में, पुस्तक के अंत में, ऐसा लगता है कि यहूदा पर आक्रमण और उन पर आने वाली विपत्ति और संकट आसन्न है। और इसलिए, शायद परमेश्वर और हबक्कूक के बीच यह संवाद और हबक्कूक की इस सब पर प्रतिक्रिया तुरंत नहीं हुई होगी।

हम एक ऐसी सेवकाई देखते हैं जो बेबीलोन के संकट के दौरान फैली हुई है। यहाँ बताया गया है कि संवाद किस बारे में है। और हबक्कूक द्वारा उठाए गए प्रश्न, और फिर उन चीज़ों के प्रति परमेश्वर की प्रतिक्रियाएँ, यही इस पुस्तक की संरचना है।

अध्याय 1 की शुरूआती आयतों में, हबक्कूक की प्रारंभिक शिकायत, और ठीक यही बात यहाँ भी है, यह विलाप या शिकायत है जैसा कि हम भजनों में देखते हैं। हबक्कूक की शिकायत है कि देश दुष्टता और बुराई से अभिभूत हो रहा है। यहूदा के लोग पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुके हैं, और ऐसा लगता है कि परमेश्वर इस बारे में कुछ नहीं कर रहा है।

यह अध्याय 1 श्लोक 2 से 4 में है। इस बारे में बात करने के लिए कुछ बहुत शक्तिशाली रूपक इस्तेमाल किए गए हैं। हबक्कूक कहने जा रहा है कि देश में दुष्टता इतनी व्यापक है कि कानून पंगु हो गया है, और भगवान के टोरा का पालन नहीं किया जा रहा है, और यह वह करने में सक्षम नहीं है जो इसे करने का इरादा था। यह भी कहता है कि न्याय विकृत है, यह विचार कि यह मुड़ा हुआ है, यह झुका हुआ है।

और इसलिए, कानून पंगु हो गया है, और न्याय विकृत हो गया है। जब हबक्कूक देश के चारों ओर देखता है और बेबीलोन के संकट से ठीक पहले के दिनों में वहाँ की स्थितियों को देखता है, तो देश दुष्टता, बुराई और अधर्म से भरा हुआ है। और हबक्कूक का सवाल है, अध्याय 1, श्लोक 3 में एक रास्ता है, तुम मुझे अधर्म क्यों दिखाते हो, और तुम गलत को क्यों निष्क्रिय रूप से देखते हो? इसलिए, इस व्यापक बुराई के प्रकाश में, कानून पंगु हो गया है, और न्याय झुका हुआ, विकृत और विकृत हो गया है।

हे परमेश्वर, तुम कहाँ हो? और इस तरह, फिर से, भजनों की विलाप भाषा के समान। भजनकार अक्सर परमेश्वर से पूछता है, तुमने ऐसा क्यों किया? या तुम कहाँ हो? या क्यों? या कब तक? और यहाँ तक कि, कभी-कभी, कुछ ऐसी भाषा का उपयोग करते हुए जिसे हम निश्चित नहीं हैं कि तुम परमेश्वर के साथ उचित रूप से उपयोग कर सकते हो। हे परमेश्वर, तुम क्यों सो रहे हो? तुम कब जागने वाले हो? और इसलिए, हबक्कूक जानना चाहता है, परमेश्वर कब जागेगा और देश में हो रहे अन्याय के बारे में कुछ करेगा? और इसलिए, तुम मुझे अधर्म क्यों दिखाते हो, और तुम गलत को निष्क्रियता से क्यों देखते हो? भविष्यवक्ताओं में कई अन्य अंश हैं जो इस विचार को उजागर करेंगे कि इस्राएल या यहूदा के अंतिम दिनों में, धर्मी एक छोटे से अल्पसंख्यक थे।

मीका ने कहा था कि असीरियन संकट के दौरान देश में धर्मी लोग गायब हो गए थे। यशायाह 57.1 कहता है, धर्मी लोग नाश हो रहे हैं और कोई भी इसे गंभीरता से नहीं लेता। यिर्मयाह, एक

भविष्यवक्ता जिसका समय हबक्कूक के समय से मेल खाता है क्योंकि वे दोनों बेबीलोन के संकट से निपट रहे हैं।

यिर्मयाह अध्याय 5 में, वह इस तथ्य के बारे में बात करता है कि यरूशलेम शहर में धर्मी लोगों को ढूँढ़ना बहुत मुश्किल है। और यिर्मयाह कहता है, यरूशलेम की सड़कों पर इधर-उधर दौड़ो। देखो और ध्यान दो।

उसके चौकों की तलाशी लो और देखो कि क्या तुम किसी आदमी को पा सकते हो। इसलिए, परमेश्वर यिर्मयाह को तलाश करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है। क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति को पा सकते हो जो धर्मी हो? और देखो कि क्या तुम किसी ऐसे व्यक्ति को पा सकते हो जो न्याय करता हो और सच्चाई की तलाश करता हो, ताकि मैं उसे क्षमा कर सकूँ।

यद्यपि वे यहोवा के जीवन की शपथ खाते हैं, तौभी वे झूठी शपथ खाते हैं। हे यहोवा, अपनी आंखें सच्चाई की ओर मत लगा। तूने उन्हें मारा है, परन्तु उन्होंने कोई पीड़ा महसूस नहीं की।

तूने उनको भस्म कर दिया है। वे सुधार को स्वीकार करने से इनकार करते हैं। उन्होंने अपने चेहरों को चट्टानों से भी अधिक कठोर बना लिया है और उन्होंने पश्चाताप करने से इनकार कर दिया है।

तो, यिर्मयाह उस संस्कृति और चीज़ों को देखता है जो बेबीलोन के आक्रमण से ठीक पहले यरूशलेम में चल रही थीं। वह हबक्कूक जैसी ही बात कहता है। मैं यरूशलेम की सड़कों पर घूम चुका हूँ।

परमेश्वर उसे ऐसा करने के लिए कहता है। और प्रभु कहते हैं, क्या तुम समझना चाहते हो कि मैं इन लोगों के विरुद्ध न्याय क्यों कर रहा हूँ? वहाँ कोई भी धर्मी लोग नहीं हैं। इसलिए, यिर्मयाह ने पद चार में इसका उत्तर दिया, और उसने कहा, ठीक है, ये केवल गरीब लोग हैं।

उनमें कोई समझ नहीं है। मैं सिर्फ गरीब लोगों को ही देख रहा हूँ और उनमें यह समझने की समझ नहीं है कि क्या अच्छा है और क्या सही है। निश्चित रूप से जितने ज़्यादा सुप्रतिष्ठित लोग, जितने ज़्यादा अमीर लोग, नेता और मेमने होंगे, वे निश्चित रूप से बेहतर होंगे।

लेकिन सुनो कि यह क्या कहता है। गरीब लोग यहोवा का मार्ग और अपने परमेश्वर का न्याय नहीं जानते। इसके बजाय मैं महान लोगों के पास जाऊँगा, और उनसे बात करूँगा, क्योंकि वे यहोवा का मार्ग और अपने परमेश्वर का न्याय जानते हैं।

मैं धनवानों, प्रमुख लोगों और नेताओं के पास जाऊँगा। निश्चित रूप से, वे प्रभु को जानेंगे। लेकिन उन सभी ने एक समान रूप से जुए को तोड़ा है और उन्होंने बंधनों को तोड़ दिया है।

यह सिर्फ गरीबों की बात नहीं है, और यह सिर्फ अज्ञानियों की बात नहीं है। यह सिर्फ अशिक्षित लोगों की बात नहीं है। समाज के हर तबके से, ये लोग प्रभु से दूर हो गए हैं। भविष्यवक्ता

यहेजकेल का भी ऐसा ही अनुभव है, जब परमेश्वर निर्वासन में रह रहे भविष्यवक्ता यहेजकेल को अपने लोगों के बीच दुष्टता की बुराई के बारे में समझाने की कोशिश कर रहा था।

अध्याय 9, श्लोक 3 में यह लिखा है। अब इस्राएल के परमेश्वर की महिमा उस कुर्सी से ऊपर उठकर घर की दहलीज पर आ गई थी। और उसने सन के वस्त्र पहने हुए उस व्यक्ति को बुलाया, जो एक स्वर्गदूत था और जिसकी कमर में लिखने की डिब्बी थी। और यहोवा ने उससे कहा, यरूशलेम नगर से होकर जाओ और उन लोगों के माथे पर निशान लगाओ जो उसमें किए गए सभी घृणित कामों पर विलाप करते और कराहते हैं।

और उसने मेरे सुनते हुए दूसरों से कहा, उसके पीछे शहर में जाओ और मार डालो। तुम बूढ़ों, जवानों, युवतियों, छोटे बच्चों और महिलाओं को मत छोड़ो, तुम उन पर दया मत करो, उन्हें सीधे मार डालो, लेकिन जिस पर निशान हो उसे मत छुओ और मेरे पवित्र स्थान से शुरू करो। इसलिए, उन्होंने वहाँ से उन बुजुर्गों के साथ शुरुआत की जो घर के सामने थे।

और इसलिए, परमेश्वर के न्याय करने से पहले, स्वर्गदूत वहाँ जाते हैं और उन लोगों के सिर और माथे पर निशान लगाते हैं जो धर्मी और ईश्वरीय हैं। समस्या यह है कि वहाँ ऐसे बहुत कम लोग हैं। और जबकि परमेश्वर धर्मी लोगों पर ध्यान देगा, अंततः, वह शहर को मिटा देगा और नष्ट कर देगा क्योंकि उस शहर की दुष्टता व्यापक हो गई है।

और यही बात हबक्कूक अध्याय 1 की शुरुआत में इस तरह के हताश करने वाले प्रश्न की ओर ले जाती है। हे परमेश्वर, आप इस बारे में कुछ क्यों नहीं कर रहे हैं? अध्याय 1, श्लोक 5 से श्लोक 11 में, हमें प्रभु का उत्तर मिलता है। और प्रभु कहते हैं कि मैं इस बारे में कुछ करने जा रहा हूँ, लेकिन यहाँ आश्चर्य का तत्व है। जिस तरह से मैं अपने लोगों की दुष्टता को दंडित करने जा रहा हूँ वह यह है कि मैं कसदियों को भेजने जा रहा हूँ।

और हबक्कूक के लिए, यह एक आश्चर्यजनक बात होने जा रही है। सिर्फ इसलिए नहीं कि आक्रमण शुरू नहीं हुआ है, बल्कि फिर से परमेश्वर एक दुश्मन राष्ट्र, एक दुष्ट और बुरे राष्ट्र का उपयोग कैसे कर सकता है? परमेश्वर इन लोगों को अपने न्याय के साधन के रूप में कैसे इस्तेमाल कर सकता है? तो, हम उसी भविष्यवाणी के विचार पर वापस आ गए हैं जिसे हमने कई जगहों पर देखा है। यशायाह कहने जा रहा है, अश्रूर मेरे क्रोध की छड़ी थी।

परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए उनका उपयोग करने जा रहा है। और इस सब में यह रहस्य है जहाँ परमेश्वर हमसे उस पर भरोसा करने के लिए कहता है। कि प्रभु एक धर्मी परमेश्वर है जो दुश्मन देशों और उनकी हिंसा और उनके युद्ध और इन सभी बुरी और भयानक चीजों का उपयोग कर सकता है, और फिर भी खुद उस बुराई में भाग नहीं लेता है।

यह एक रहस्य है जिस पर परमेश्वर हमसे भरोसा करने के लिए कहता है। और जब हबक्कूक यह क्यों प्रश्न उठाता है, तो परमेश्वर भी उससे इसी पर भरोसा करने के लिए कहता है। क्योंकि देखो, पद 6 में, मैं कसदियों को उभार रहा हूँ, वह कटु और जल्दबाज़ जाति जो पराए घरों पर कब्ज़ा करने के लिए पृथ्वी की चौड़ाई में फैलती है।

वे खूंखार और डरावने हैं। उनका न्याय और सम्मान उनके अपने ही अंदर से आता है। इसलिए, बेबीलोन की सेना ने मेदियों के साथ गठबंधन किया और उन्होंने असीरियन साम्राज्य, आशेर 614, निनवे 6012, हारान 609 को गिरा दिया और फिर 605 ईसा पूर्व में कारकेमिश में मिस्र पर बड़ी जीत हासिल की।

अंततः, वे लोग परमेश्वर और इस हिंसक शक्ति या परमेश्वर के लोगों और इस शक्तिशाली सेना और इस शक्तिशाली राष्ट्र के विरुद्ध आएंगे जिसे परमेश्वर ने खड़ा किया है। वे उस प्रश्न का उत्तर हैं जिसे हबक्कूक ने इस पुस्तक की शुरुआत में उठाया है। इस तथ्य के बारे में कोई विवाद नहीं है कि कसदियों और बेबीलोन के लोग स्वयं दुष्ट और हिंसक हैं।

हमें इस बात का अंदाजा उनके अहंकार से मिलता है कि वे प्रभु की पूरी तरह से अवहेलना करते हैं और फिर भी परमेश्वर उन्हें अपने साधन के रूप में इस्तेमाल करने जा रहा है। श्लोक 11 में यह कहा गया है: वे हवा की तरह बहते हैं और आगे बढ़ जाते हैं। वे दोषी लोग हैं जिनकी अपनी शक्ति ही उनका परमेश्वर है।

इसलिए, प्रभु निश्चित रूप से यहूदा को दंडित करने के लिए बेबीलोनियों का उपयोग नहीं कर रहे हैं क्योंकि बेबीलोनवासी एक अनुकरणीय लोग हैं। वे एक और दुष्ट और बुरे साम्राज्य हैं। कुछ मायनों में, वे अशूरियों को प्रतिबिंबित करते हैं, और अपने अहंकार में, वे अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं।

यशायाह 13 और 14 में, बेबीलोन का राजा वही है जो कहता है, मैं अपने सिंहासन को परमेश्वर के तारों से भी ऊपर उठाऊंगा। वह खुद को परमेश्वर के बराबर और बराबर मानता है। यशायाह का जवाब है, ठीक है, आखिरकार यह घमंडी, अहंकारी राजा दिन की शुरुआत में सुबह के तारे की तरह आसमान से गिरने वाला है।

बेबीलोन के लोगों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो अनुकरणीय हो। वे अपनी ताकत पर भरोसा करते हैं। उन्होंने उसी को ईश्वर बना लिया है।

और फिर, श्लोक 16 और 17, बेबीलोन के लोगों की अधर्मिता के बारे में बात करते हुए, कहते हैं, इसलिए, वह अपने जाल के लिए बलिदान करता है, वह जाल जिसका उपयोग वह राष्ट्रों को पकड़ने के लिए करता है। वह इसी की पूजा करता है, और इसके लिए बलिदान भी चढ़ाता है। वह अपने महाजाल के लिए भेंट चढ़ाता है क्योंकि उनके द्वारा वह विलासिता में रहता है और उसका भोजन समृद्ध होता है।

तो क्या वह हमेशा के लिए अपने जाल को खाली करता रहेगा और राष्ट्रों को बेरहमी से मारता रहेगा? बेबीलोन के लोगों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो ईश्वरीय या धार्मिक हो। वे अपनी शक्ति की पूजा करते हैं। यह सिर्फ झूठे देवताओं की पूजा करने का मुद्दा नहीं है।

वे उन हथियारों की पूजा करते हैं जिनका इस्तेमाल वे जाल बिछाने और उत्पीड़न करने और अंततः इन दूसरे देशों पर विजय पाने के लिए करते हैं। तो यह भगवान का जवाब है। मैं तुम्हारे खिलाफ नास्तिक बेबीलोनियों को भेज रहा हूँ।

हबक्कूक के विलाप के प्रति प्रभु की यही प्रतिक्रिया है। तो यह एक दूसरे विलाप की ओर ले जाएगा और एक स्पष्ट और एक प्रश्न है कि जैसा कि हम इस पर काम कर रहे हैं अगर हमें इस कहानी का समाधान नहीं पता होता, तो मुझे लगता है कि हम वही सवाल पूछ रहे होते जो हबक्कूक ने पूछा था। और इसलिए, हबक्कूक अध्याय 1, श्लोक 12 से 17 में दूसरे प्रश्न के साथ परमेश्वर के पास वापस आने वाला है।

और आप शायद इसका अनुमान लगा सकते हैं, भले ही आपने कुछ समय से किताब नहीं पढ़ी हो। हबक्कूक यहाँ शुरुआत में परमेश्वर के बारे में कुछ पुष्टि करने जा रहा है। वह आस्थावान व्यक्ति है, और वह शुरू से ही परमेश्वर के बारे में कहता है, क्या तू सनातन से नहीं है? हे प्रभु, मेरे परमेश्वर, मेरे पवित्र परमेश्वर, हम नहीं मरेंगे।

तो, इस सबके बीच, एक भरोसा है कि भले ही परमेश्वर ने कहा है, मैं उसके खिलाफ नास्तिक बेबीलोनियों को भेज रहा हूँ। परमेश्वर, हम मानते हैं कि आप ही शाश्वत हैं। आप ही पवित्र हैं।

हम नहीं मरेंगे। आप हमारी रक्षा करेंगे। हम यह भी जानते हैं कि आयत 13, परमेश्वर की पवित्रता और परमेश्वर की धार्मिकता के बारे में सबसे महान कथनों में से एक है जो पूरी बाइबल में पाया जाता है।

हबक्कूक ने कबूल किया और कहा, हे प्रभु, मैं आपके चरित्र को जानता हूँ और मैं जानता हूँ कि आप एक ऐसे ईश्वर हैं जिनकी आँखें बुराई को देखने के लिए बहुत शुद्ध हैं। हे ईश्वर, आपने खुद को बुराई से अलग कर लिया है। आप एक पवित्र ईश्वर हैं।

और पुराने नियम में पवित्रता का एक हिस्सा परमेश्वर की पृथकता है जो उसकी नैतिक पूर्णता का परिणाम है। और प्रभु, आप इतने शुद्ध और पवित्र हैं कि आप बुराई को भी नहीं देख सकते। आप इसे गलत तरीके से नहीं देख सकते।

यह परमेश्वर का चरित्र है। और इसलिए, सवाल यह है कि आप बेबीलोनियों जैसे अधर्मी राष्ट्र को अपने न्याय के साधन के रूप में कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं? आप इन लोगों को, जो अपने परमेश्वर के रूप में अपनी शक्ति पर भरोसा करते हैं, अपने न्याय के साधन के रूप में कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं? आप इन सेनाओं और नबूकदनेस्सर और बेबीलोन के लोगों को कैसे अनुमति दे सकते हैं? आप उन्हें पद 17 में इस शिकायत के अंत में कैसे अनुमति दे सकते हैं? क्या वह तब अपने जाल को खाली करता रहेगा और राष्ट्रों को निर्दयतापूर्वक मारता रहेगा? प्रभु, आप बेबीलोनियों को हमारा न्याय करने देंगे? क्या आप उन्हें हमेशा राष्ट्रों को मारने, बंदी बनाने, उन पर अत्याचार करने और उन्हें गुलाम बनाने की अनुमति देंगे? क्या आप कभी बेबीलोनियों के बारे में कुछ करने जा रहे हैं? इसलिए, अपनी पहली शिकायत में, हबक्कूक कहता है, प्रभु, आप यहूदा की भूमि में व्याप्त दुष्टता के बारे में कब कुछ करने जा रहे हैं? परमेश्वर कहता है कि मैं कुछ कर रहा हूँ। मैं बेबीलोनियों को भेज रहा हूँ।

तो, दूसरा सवाल, अच्छा, प्रभु, आप ऐसा कैसे कर सकते हैं? और क्या आप कभी बेबीलोन के लोगों का न्याय करेंगे और उनकी दुष्टता का ख्याल रखेंगे? परमेश्वर ने अपना दूसरा उत्तर अध्याय

दो में दिया है। और इसकी तैयारी में, जैसे-जैसे संवाद आगे बढ़ता है, अध्याय दो की शुरुआत में हबक्कूक ने जो कहा, वह यहाँ दिया गया है। वह कहता है कि मैं अपनी चौकी पर खड़ा रहूँगा।

याद रखें, भविष्यद्वक्ता इस्राएल में पहरदार थे। मैं खुद को मीनार पर खड़ा करूँगा और देखूँगा कि वह मुझसे क्या कहता है और मैं उसके बारे में क्या जवाब दूँगा। मैं सुनना चाहता हूँ कि परमेश्वर क्या कहता है।

और प्रभु कहते हैं कि मैं चाहता हूँ कि तुम इस दर्शन को लिखो। मैं चाहता हूँ कि तुम इसे स्पष्ट रूप से तख्तियों पर लिखो ताकि जो इसे पढ़े वह दौड़ सके। क्योंकि अभी भी दर्शन अपने नियत समय का इंतज़ार कर रहा है।

यह अंत की ओर तेजी से बढ़ रहा है। यह झूठ नहीं बोलेंगा। ठीक है।

किसी भविष्यद्वक्ता को हमेशा कुछ लिखने के लिए तत्काल या प्रत्यक्ष आदेश नहीं दिया जाता है। और इसलिए, यह महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर कहता है, मैं चाहता हूँ कि तुम इसे लिखो। इस दर्शन का वचन, मैं चाहता हूँ कि तुम इसे लिखो।

इसे रिकॉर्ड करने के पीछे उद्देश्य यह है कि जब ऐसा होता है और जब यह घटित होता है, तो धर्मी लोग याद रखेंगे कि परमेश्वर ने शुरू में ही कहा था कि ऐसा होगा। यह उन लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए है जो प्रभु पर भरोसा कर रहे हैं और अंततः इसे हल करने के लिए प्रभु की ओर देख रहे हैं। प्रभु कहते हैं, अगर यह धीमा लगता है, तो इसके लिए प्रतीक्षा करें।

यह अवश्य होगा। इसमें देरी नहीं होगी। और इसीलिए इसे ठोस सबूत के तौर पर लिखा गया है कि परमेश्वर ने शुरू में ही कहा था कि यह होने वाला है।

यशायाह की पुस्तक के अध्याय 8 में यशायाह को अपने बेटे के जन्म से पहले उसका नाम लिखने के लिए कहा गया है ताकि बेटे के जन्म के बाद राजा और लोगों को याद दिलाया जा सके कि इस बेटे ने लोगों को एक संदेश दिया है, और इसे लिखने से यह संदेश जाता है। आम तौर पर कोई व्यक्ति पेंसिल लेकर खड़ा नहीं होता और नबी द्वारा कही गई हर बात को लिख देता। इसलिए, इसे इसलिए लिखा जाता है ताकि इसे सुरक्षित रखा जा सके।

और परमेश्वर के लोग और जो परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, हबक्कूक जैसे धर्मी लोग, जब वे इस संकट से गुज़र रहे हैं और सभी आपदाओं और अराजकता को देख रहे हैं, तो उन्हें परमेश्वर द्वारा अपना वादा पूरा करने की प्रतीक्षा करनी चाहिए। पद 4 में वादा है कि धर्मी अपने विश्वास से जीवित रहेगा। जो धर्मी हैं, जो परमेश्वर पर भरोसा करते हैं, उन्हें परमेश्वर द्वारा किए जाने वाले कार्य की प्रतीक्षा करनी चाहिए।

और फिर परमेश्वर जो उत्तर देता है वह यह है कि जब वह यहूदा का न्याय कर लेगा और बेबीलोनियों को अपने न्याय के साधन के रूप में इस्तेमाल कर लेगा, तो वह बेबीलोनियों पर अपना न्याय करेगा। निर्वासन के दौरान, ऐसा लग सकता है कि बेबीलोनवासी एक अजेय राष्ट्र थे।

यह इस्राएल के लोगों को भी लग सकता है, वाह, ऐसा लगता है कि बेबीलोन के देवता इस्राएल के परमेश्वर से भी महान हैं।

इस बीच, परमेश्वर अंततः बेबीलोन के लोगों का न्याय करेगा। अध्याय 2 के शेष भाग में दुःख की कई भविष्यवाणियाँ हैं जहाँ बेबीलोन के लोगों पर पाँच अलग-अलग विपत्तियाँ घोषित की गई हैं। परमेश्वर कहने जा रहा है, अंततः उसका न्याय बेबीलोन पर पड़ेगा।

शोकपूर्ण भविष्यवाणी का उपयोग, याद रखें कि इसकी पृष्ठभूमि अंतिम संस्कार विलाप है। एक अंतिम संस्कार होने जा रहा है, और बेबीलोन के लोग अपनी दुष्टता, अपनी हिंसा और अपने साम्राज्य का निर्माण करने के लिए इस्तेमाल किए गए उत्पीड़न के कारण मृत्यु और विनाश का सामना करेंगे। इसलिए, भगवान हिसाब बराबर करने जा रहे हैं।

फिर से, हबक्कूक और यिर्मयाह के संदेश के बारे में सोचें, जो हबक्कूक का समकालीन है। यिर्मयाह ने कहा कि यहूदा बेबीलोन के हाथों परमेश्वर के क्रोध का प्याला पीएगा। यहूदा के आस-पास के राष्ट्र बेबीलोन के हाथों क्रोध का प्याला पीएँगे।

वर्तमान समय में परमेश्वर ने इन राष्ट्रों पर प्रभुता बाबुल को सौंपी है। एक तरह से जिस तरह दाऊद परमेश्वर का सेवक था, और दाऊद उसका उप-शासक और उसका प्रतिनिधि था। बाबुल का राजा अब परमेश्वर का सेवक है।

लेकिन यिर्मयाह कहता है, राष्ट्रों और यहूदा के परमेश्वर के क्रोध का प्याला पीने के बाद, बाबुल स्वयं इस क्रोध को पीएगा और प्याले को पीएगा और उसे निचोड़कर पी जाएगा, और परमेश्वर बाबुल पर न्याय करेगा। हबक्कूक भी ठीक यही बात कह रहा है। यहाँ ध्यान इस बात पर है कि अध्याय दो में, इन दुःखद भविष्यवाणियों में, हिंसा और उत्पीड़न के कारण न्याय होगा, और विशेष रूप से, मुझे लगता है कि यहाँ इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि कैसे बाबुल ने नूह की वाचा के आदेशों को तोड़ा है।

ठीक है। अध्याय दो के लेआउट में, ये दुःखद भविष्यवाणियाँ बहुत ही कलात्मक, काव्यात्मक रूप से संरचित तरीके से रखी गई हैं, जिस पर मैं ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। अध्याय दो में दिए गए पहले तीन दुःखों में, छंद छह से 14 में, हमारे पास तीन दुःख हैं जो दस काव्य पंक्तियों में व्यक्त किए गए हैं।

और फिर, इन पहले तीन विपत्तियों के अंत में, परमेश्वर की महानता के बारे में एक कथन है जो आने वाले न्याय के माध्यम से प्रतिबिंबित और प्रकट होगा। श्लोक 14 कहता है कि पृथ्वी प्रभु की महिमा के ज्ञान से भर जाएगी जैसे पानी समुद्र को ढक लेता है। जब न्याय इस महान साम्राज्य पर आएगा, तो परमेश्वर की महानता और महिमा सभी के लिए स्पष्ट और दृश्यमान होगी।

मुझे यकीन है कि यहूदी और निर्वासित लोग जो बेबीलोन चले गए थे, उन्होंने कभी-कभी सोचा होगा कि बेबीलोन के देवता भगवान से भी बड़े हैं। लेकिन जब परमेश्वर यह न्याय लाएगा, तो हर कोई कह सकेगा, और हर कोई कह सकेगा, हर कोई परमेश्वर की महिमा की महानता को

देखेगा। फिर हमारे पास अंतिम दो दुखद भविष्यवाणियाँ हैं, फिर से, अध्याय दो में, श्लोक 15 से 19 तक।

इन्हें दस काव्य पंक्तियों में प्रस्तुत किया गया है जो अध्याय के पिछले भाग में जो कुछ है, उसे संतुलित करते हैं। और फिर, एक समापन कथन है, लेकिन प्रभु अपने पवित्र मंदिर में हैं। सारी पृथ्वी उनके सामने चुप रहे।

और इसलिए परमेश्वर जो महान न्याय करने जा रहा है, वह अंततः लोगों पर परमेश्वर की महानता और परमेश्वर की महिमा का प्रभाव डालेगा। परमेश्वर बेबीलोनियों से महान है। और परमेश्वर बेबीलोनियों को अपने न्याय के साधन के रूप में उपयोग करेगा और फिर पलटकर उनके द्वारा किए गए सभी कार्यों के लिए उनका न्याय करेगा।

अब, मैं विशेष रूप से चाहता हूँ कि हम इस बात पर ध्यान दें कि यह उनकी हिंसा है; यह उनका खून-खराबा है। मैं चाहता हूँ कि हम हबक्कूक 2 में बेबीलोन के न्याय और उत्पत्ति 9 में नूह की वाचा के बीच संबंध पर ध्यान दें। यह धार्मिक विचार हमारे सामने तब आता है जब हम भविष्यवक्ताओं के माध्यम से आते हैं। हबक्कूक में अध्याय दो, श्लोक आठ, कहता है, क्योंकि तुमने कई राष्ट्रों को लूटा है, इसलिए लोगों के सभी बचे हुए लोग तुम्हें मनुष्यों के खून और पृथ्वी, शहरों और उन पर रहने वाले सभी लोगों के साथ हिंसा के लिए लूटेंगे।

उन्होंने हिंसा और खून-खराबा किया है, जिसका खामियाजा उन्हें भुगतना पड़ेगा। उन्हें उनके अपराध के अनुसार ही सजा मिलेगी। भगवान उन्हें सजा सुनाएंगे।

अध्याय दो, श्लोक 12 में यह कहा गया है: हाय उस पर जो खून से शहर बनाता है और जो अधर्म पर शहर बनाता है। बेबीलोन साम्राज्य की नींव क्या थी? नींव उनकी हिंसा और उनका खून-खराबा था। अध्याय दो, श्लोक 17, लेबनान के साथ की गई हिंसा आपको अभिभूत कर देगी, साथ ही उन जानवरों का विनाश भी होगा जिन्होंने मनुष्य के खून और पृथ्वी, शहरों और उनके साथ रहने वाले सभी लोगों के साथ हिंसा के लिए उसे भयभीत कर दिया है।

तो यह सब इस तरह से एक तरह का परहेज है। प्रभु उन्हें रक्तपात के लिए जवाबदेह ठहराने जा रहे हैं। बाइबिल में उत्पत्ति नौ और नूह की वाचा से सीधा संबंध है, जिसमें कहा गया है, जो कोई मनुष्य द्वारा मनुष्य का खून बहाएगा, उसका खून बहाया जाएगा।

परमेश्वर उस समय और अब राष्ट्रों का न्याय नूह की वाचा के आधार पर करता है। मुझे लगता है कि इस अंश में भी नूह और नूह की वाचा का एक और सूक्ष्म संदर्भ है जो हमें इस संबंध को बनाने में मदद करता है। अध्याय दो, श्लोक 15 में, यहाँ बेबीलोन में घोषित की गई विपत्तियों में से एक और है।

हाय उस पर जो अपने पड़ोसियों को शराब पिलाता है। तू अपना क्रोध उंडेलता है और उन्हें नशे में धुत कर देता है ताकि उनकी नग्नता को देख सके। इसी तरह, नहूम ने अशशूर के बारे में एक वेश्या के रूप में बात की थी जिसने इन अन्य राष्ट्रों को बहकाया और लुभाया और फिर इसका इस्तेमाल उन पर अत्याचार करने और उन पर हिंसा करने के लिए किया।

बाबुल उन्हें नशे में धुत कर देता है, अपनी ताकत से, सैन्य गठबंधन की संभावना से, बाबुल की संपत्ति में हिस्सेदारी से उन्हें लुभाता है। फिर बाबुल अंततः नग्नता को उजागर करता है और अपने पड़ोसियों को नशे में धुत करने के बाद उनका फायदा उठाता है। यह कहता है, कौन उसे शराब पिलाता है और उन्हें नशे में डालता है? आप अपना क्रोध उंडेलते हैं और उन्हें नशे में डालते हैं ताकि उनकी नग्नता को देख सकें।

जाहिर है, मुझे लगता है कि रक्तपात पर जोर देने के मद्देनजर, बाढ़ के समय के बाद नूह और उसके नशे की कहानी का संदर्भ है। तो ये सभी दुखद भविष्यवाणियाँ, यह विचार जो इन सभी को एक साथ जोड़ता है, वह विशिष्ट विचार है कि भगवान बेबीलोन पर उनके हिंसा और उनके रक्तपात के कारण न्याय करने जा रहे हैं। अध्याय एक में, जब वे अपनी विजय को अंजाम देते हैं, तो उनकी शक्ति ही उनका भगवान है।

वे अपने जाल की पूजा करते हैं जो उन्हें दूसरे राष्ट्रों को फँसाने में सक्षम बनाता है। हालाँकि, अंततः यही उनके न्याय का कारण और कारण बनने वाला है। इसलिए, हबक्कूक और प्रभु के बीच संवाद यहाँ एक तरह से रुकने के बिंदु पर पहुँच गया है।

हबक्कूक ने पहला सवाल उठाया, हे प्रभु, यहूदा के देश में अन्याय के बारे में आप क्या करने जा रहे हैं? परमेश्वर का जवाब, मैं कुछ कर रहा हूँ। मैं बेबीलोनियों को भेज रहा हूँ, और वे जल्द ही वहाँ पहुँच जाएँगे। दूसरा सवाल, ठीक है, उसके प्रकाश में, आप बेबीलोनियों का उपयोग हमारा न्याय करने के लिए कैसे कर सकते हैं, जबकि वे हमसे ज़्यादा दुष्ट और ज़्यादा दोषी हैं? परमेश्वर का जवाब है, आखिरकार, मैं बेबीलोनियों का न्याय करने जा रहा हूँ।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि हबक्कूक जैसे भविष्यवक्ता के लिए भी इस संदेश पर विश्वास करना कितना मुश्किल रहा होगा? जो कुछ भी हो रहा था उसे देखना और अंततः यह विश्वास करना कि परमेश्वर इस सब को उलटने जा रहा है। बेबीलोन की सेना की ताकत देखना। वे अजेय दिखते हैं।

वे अजेय दिखते हैं। यहूदा के पास इसका सामना करने के लिए कुछ भी नहीं है। परमेश्वर हबक्कूक से कहता है, अंततः, मैं बेबीलोन राष्ट्र का न्याय करने जा रहा हूँ।

यह हमारे लिए देखना आसान है क्योंकि हम कहानी का बाकी हिस्सा जानते हैं। हम जानते हैं कि 70 साल बाद क्या हुआ। हबक्कूक के पास ऐतिहासिक रूप से यह पुष्टि करने का कोई तरीका नहीं था कि यह सच था।

इसीलिए यह विचार है: इस दर्शन को लिख लें। जो लोग प्रभु पर भरोसा करते हैं और जो लोग विश्वास करते हैं, वे इसके घटित होने का इंतज़ार करते हैं। सपन्याह अध्याय 3, चूँकि परमेश्वर इस परम उद्धार को लाने जा रहा है, इसलिए धर्मी लोगों को इसका इंतज़ार करना चाहिए।

मीका अध्याय 7, मैं इस बात पर विलाप करता हूँ और शोक करता हूँ कि देश में कोई धार्मिकता नहीं है। हम पर अत्याचार करने वाले अत्याचार कर रहे हैं। परमेश्वर न्याय कर रहा है, लेकिन जो

लोग धार्मिक और ईश्वरीय हैं और आस्थावान लोग हैं, वे परमेश्वर द्वारा उद्धार लाने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

तो, हबक्कूक की पुस्तक के अंत में, इसका समाधान यह है कि हमारे पास एक भजन और एक गीत है। कुछ अर्थों में, यह प्रश्न और उत्तर के इस चक्र से अलग है। हमारे पास एक उपरिलेख है।

इसकी शुरुआत में एक संगीत संकेतन है। यह भजन संहिता में देखे जाने वाले उपशीर्षकों जैसा दिखता है। यह उस संवाद से कुछ हद तक अलग और पृथक है जो हमने पहले ही पुस्तक में पढ़ा है।

इसका कारण यह है कि यही समाधान प्रदान करता है। यह कोई अलग रचना नहीं है जिसे मुझे लगता है कि बाद में पुस्तक में जोड़ा गया है। यह संदेश और तर्क के लिए आवश्यक है क्योंकि यह समाधान प्रदान करता है।

यह हमें यह दर्शाता है कि परमेश्वर से बातचीत करने के बाद, अपना विलाप व्यक्त करने के बाद, अपने प्रश्न उठाने के बाद, और यहाँ तक कि कुछ अर्थों में प्रभु के सामने अपने संदेह व्यक्त करने के बाद भी, वह वहीं नहीं रुकता। हबक्कूक निरंतर संदेह या प्रश्न या उलझन में रहने और प्रभु को समझने में असमर्थ होने की स्थिति में नहीं रहता। वह अंततः विश्वास की स्थिति में पहुँच जाता है जहाँ वह अपने विश्वास को अपने स्वीकारोक्ति में व्यक्त करता है कि उसे विश्वास है कि परमेश्वर वही करेगा जो उसने करने का वादा किया है।

इस आपदा के बीच, इस अराजकता में, हबक्कूक एक प्रार्थना व्यक्त करता है जहाँ वह भगवान से अपने लोगों के लिए अंततः हस्तक्षेप करने और उन्हें बचाने और उन्हें मुक्ति दिलाने के लिए कहता है। इस बीच, जबकि आपदा हो रही है, हबक्कूक कबूल करता है कि वह भगवान पर भरोसा करेगा, भले ही वह पूरी तरह से समझ न पाए। इसलिए, मुझे लगता है कि हमारे लिए यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि इस पुस्तक में विलाप और प्रश्न से अंततः विश्वास की अभिव्यक्ति तक एक आंदोलन है।

यदि आप भजनों में पाए जाने वाले विलापों को देखेंगे, तो वे परमेश्वर के साथ कुछ बहुत ही गंभीर प्रश्न उठा सकते हैं, लेकिन अंततः, लगभग सभी विलापों में, संकट का समाधान, परमेश्वर के हस्तक्षेप का वादा, या तो आत्मविश्वास या विश्वास या भरोसे की स्वीकारोक्ति या प्रशंसा की शपथ की ओर ले जाता है, कि मैं प्रभु की स्तुति करूँगा। मुझे पता है कि परमेश्वर हस्तक्षेप करेगा और हमें बचाएगा। यही हम हबक्कूक की पुस्तक में भी देखते हैं।

हबक्कूक दर्शाता है कि वह अध्याय दो पद चार में कही गई बात को चरितार्थ करता है: इस संकट के बीच भी धर्मी लोग विश्वास से जीवित रहेंगे। जबकि वे प्रतीक्षा कर रहे हैं, जैसा कि यह समझ में नहीं आता है, वे फिर भी परमेश्वर पर भरोसा करेंगे। इसलिए, हबक्कूक का आंदोलन जहाँ वह इसे स्वीकार करता है और जहाँ वह अपना विश्वास व्यक्त करता है, यह इस्राएल के सभी लोगों के लिए एक आदर्श है क्योंकि हम इस दौर से गुज़र रहे हैं, क्योंकि हम परमेश्वर द्वारा इसे पूरा करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हम कैसे जवाब देते हैं? हबक्कूक हमें दिखाता है कि एक सच्चे उपासक को कैसा दिखना चाहिए। वह उन धर्मी लोगों की विशेषता बताता है जो विश्वास से जीते हैं। अध्याय तीन में जो प्रार्थना है, उसमें हबक्कूक क्या करता है, और मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जिसे हम अक्सर पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के विश्वास को मजबूत करते हुए देखते हैं, वह इस बात पर विचार करता है कि परमेश्वर ने अतीत में इस्राएल के लिए क्या किया है।

यह उसे यह भरोसा दिलाता है कि परमेश्वर भविष्य में अपने लोगों के लिए हस्तक्षेप करेगा। परमेश्वर के व्यवहार का नमूना, परमेश्वर की वफ़ादारी की विशेषता, जैसा कि पूरे इस्राएल के इतिहास में प्रदर्शित किया गया है, परमेश्वर के लोगों को भरोसा देता है। हम जानते हैं कि परमेश्वर अपने वादों को पूरा करेगा।

हमारे पास एक संपूर्ण इतिहास है जो इसे दर्शाता है और इसका प्रदर्शन करता है। और इसलिए हबक्कूक यह कहता है: हे प्रभु, मैंने आपके और आपके काम की रिपोर्ट सुनी है, हे प्रभु, क्या मैं डरता हूँ। और मुझे लगता है कि उन भयानक चीजों के प्रकाश में जो परमेश्वर ने कहा है कि होने वाली हैं, वह डर एक वास्तविक भावना है।

लेकिन वर्षों के बीच में, इसे पुनर्जीवित करें। हबक्कूक भी उन चीजों से विस्मित है जो परमेश्वर ने अतीत में की हैं। और वह कहता है, हे प्रभु, आपने अतीत में इस्राएल के लिए जो किया है, मैं चाहता हूँ कि आप इसे पुनर्जीवित करें।

वर्षों के मध्य में, इसे प्रकट करो, अपने क्रोध में, दया को याद करो। तो, हबक्कूक परमेश्वर के क्रोध और उन क्रोधपूर्ण चीजों के बारे में जानता है जो परमेश्वर करने जा रहा है। वह जानता है कि परमेश्वर बेबीलोनियों का उपयोग कैसे करने की योजना बना रहा है।

लेकिन इस सबके बीच, हे परमेश्वर, दया को याद रखना। और इस प्रार्थना के बाकी हिस्सों में, जिस तरह से आप एक योद्धा के रूप में आगे बढ़ें और अपने लोगों की ओर से लड़ें और उन्हें मिस्र से बाहर निकालें और पलायन के समय उन्हें बचाया और उनके इतिहास में उनके लिए और उनके दुश्मनों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। प्रभु, अंततः, इस तरह से इस्राएल के लोगों की ओर से कार्य करते हैं।

इस भजन और इस प्रार्थना में, हमें परमेश्वर की शक्ति, पराक्रम और विस्मय का अविश्वसनीय वर्णन मिलता है, जब वह योद्धा के रूप में आगे बढ़ता है। दूसरे अध्याय में याद करें, जब परमेश्वर ने बेबीलोन का न्याय किया, तो प्रभु की महिमा पृथ्वी पर छा गई और पृथ्वी के चेहरे पर मौजूद पानी की तरह उसे ढक गई। खैर, अध्याय दो में आप यही देखते हैं कि परमेश्वर आगे बढ़ रहा है।

परमेश्वर एदोम के तीमोन नगर से आया, और पवित्र परमेश्वर पारान पर्वत से आया, जो यहूदा के दक्षिण में है। और उसका तेज आकाश पर छाया हुआ था, और पृथ्वी उसकी स्तुति से भरी हुई थी। उसका तेज ज्योति के समान था।

उसके हाथ से किरणें चमक उठीं, और वहाँ उसने अपनी शक्ति को छिपा लिया। तो, भगवान एक योद्धा के रूप में मार्च कर रहे हैं। फिर से, मुझे लगता है कि यहाँ प्राथमिक संकेत निर्गमन के समय से है।

जब परमेश्वर सिनाई पर्वत से ऊपर चढ़ता है, तो वह अपने लोगों को छुड़ाता है, उन्हें मिस्र से बाहर निकालता है, और वह अपने लोगों के साथ आगे बढ़ता है। एक योद्धा और उनके राजा के रूप में, वह उन्हें देश में ले जाने वाला है। उसकी उपस्थिति और परमेश्वर का ईश्वरीय दर्शन जिसका वर्णन हम यहाँ देखते हैं, उसकी महिमा अत्यधिक है।

आप यहाँ एक तूफान और प्रकाश की चमक, उसके साथ आने वाली बिजली की कल्पना कर सकते हैं। पाँचवें श्लोक में कहा गया है, उसके सामने, एक व्यक्ति के रूप में, जो उसकी सेना में हैं, महामारी उन आकृतियों में से एक है जो उसके साथ हैं, और महामारी उसके पीछे-पीछे आती है। इस शक्तिशाली दिव्य सेना में, महामारी और महामारी योद्धा हैं जो ईश्वर के साथ आते हैं।

परमेश्वर अपनी महानता और महिमा तथा महामारी और विपत्ति को अपने पीछे समेटे हुए, इस्राएल के शत्रुओं के विरुद्ध लड़ने के लिए आगे आया। परमेश्वर ने इस्राएल के अतीत में भी ऐसा किया था। हबक्कूक उस समय का इंतजार कर रहा है जब, हाँ, मैं समझता हूँ कि आप हमारा न्याय करने के लिए बेबीलोनियों का उपयोग करने जा रहे हैं, लेकिन मैं प्रार्थना करता हूँ, परमेश्वर, कि भविष्य में आप एक योद्धा के रूप में सामने आँगे, और आप हमारे शत्रुओं को पराजित करेंगे और हमें बचाएँगे जैसा कि आपने अतीत में करने का वादा किया था।

इसलिए, प्रभु एक योद्धा की तरह आगे बढ़ते हैं, और इस भजन की आठवीं आयत में, हबक्कूक के अध्याय तीन में, यह कहा गया है, हे प्रभु, क्या आपका क्रोध नदियों के विरुद्ध था, और क्या आपका क्रोध नदियों के विरुद्ध था या आपका क्रोध समुद्र के विरुद्ध था? जब आप अपने घोड़ों और अपने उद्धार के रथ पर सवार हुए, तो आपने अपने धनुष की म्यान खोली, और अपने कई बाणों को बुलाया। आपने नदियों से धरती को चीर दिया। पहाड़ ने आपको देखा और काँप उठा।

उग्र जल बहता चला गया। गहराई ने अपनी आवाज़ निकाली, और उसने अपना हाथ ऊपर उठाया। मैं इस कल्पना को थोड़ा बेहतर ढंग से समझने में हमारी मदद करना चाहता हूँ।

हम उस आम छवि पर वापस आ गए हैं जिसका इस्तेमाल पुराने नियम में कई जगहों पर किया गया है जिसमें भगवान अराजकता के अनियंत्रित पानी से जूझ रहे हैं। भगवान के योद्धा के रूप में आगे बढ़ने और भगवान के क्रोध में आगे बढ़ने का कारण अंततः नदियों को विभाजित करना और समुद्रों को हराना है। यह आम छवि थी जिसे प्राचीन निकट पूर्व से अपनाया गया था।

कनानियों ने अपने देवता बाल के बारे में बात की, जो तूफान का देवता था, जिसने अंततः समुद्र के देवता यम और नदी के देवता नाहर को हराया। यह उनके लिए दर्शाता है कि कैसे बाल ने अराजकता के पानी को हराकर और उसे अपने अधीन करके अपना राज स्थापित किया था। अब, उस सामान्य कल्पना के कारण जिसका उपयोग अन्य प्राचीन निकट पूर्वी धर्मों में भी किया जाता है, हम अक्सर पुराने नियम में प्रभु को इसी तरह वर्णित देखते हैं।

ऐसा इसलिए नहीं कि इस्राएली पौराणिक विश्वदृष्टि अपना रहे हैं, बल्कि इसलिए कि वे एक आम सांस्कृतिक निर्माण का उपयोग एक विवाद को जन्म देने के तरीके के रूप में कर रहे हैं कि, देखो, यह बाल नहीं है जो समुद्र को वश में करने वाला देवता है। यह बाल नहीं है जो सृष्टि की शक्तियों पर शासन करता है। यह बाल नहीं है जो जल को वश में करता है।

यह यहोवा है। यहोवा वह है जिसने समुद्र में अजगर लेविथान को हराया था, न कि बाल ने, जिसने सात सिर वाले अजगर लोटान को हराया था। इसलिए, पुराने नियम में इस कल्पना का उपयोग किया गया है।

यह सिर्फ पौराणिक कथाओं को तोड़-मरोड़ कर यह समझ लेना नहीं है कि यहोवा ही एकमात्र अनन्य देवता है। यहोवा ही सच्चा राजा है। यहोवा ही दिव्य योद्धा है।

अंततः, पुराने नियम में यह हमें एक वादा देता है कि यहोवा, सृष्टिकर्ता ईश्वर, जिसने सृष्टि के समय जल को नियंत्रित और वश में किया और वहाँ अपना राज स्थापित किया, वह ईश्वर भी है जो उन राष्ट्रों को पराजित करता है जो परमेश्वर के लोगों के विरोध में उठते हैं। उसने इतिहास में ऐसा किया है। इसका प्राथमिक प्रदर्शन और इसका प्राथमिक उदाहरण निर्गमन है।

भगवान ने केवल समुद्र को ही नहीं हराया। भगवान ने मिस्रियों को हराने के लिए समुद्र का इस्तेमाल किया। जॉन ओसवाल्ल ने पुराने नियम और प्राचीन निकट पूर्व के बीच के अंतर के बारे में बात की है।

उन्होंने अपनी पुस्तक, द बाइबल अमंग द मिथ्स में ऐसा किया है। उन्होंने इस विचार पर जोर दिया है कि ओल्ड टेस्टामेंट पौराणिक कथाओं को उधार नहीं ले रहा है। ओल्ड टेस्टामेंट पौराणिक दृष्टिकोण को नहीं अपना रहा है।

पुराना नियम सिर्फ इस मूर्तिपूजक कनानी संस्कृति के विश्वदृष्टिकोण को ही नहीं तोड़ रहा है। बाइबल इसे एक विवादास्पद तरीके से इस्तेमाल कर रही है। बाइबल यहाँ जो कुछ करती है वह कुछ हद तक अनोखी है कि यह यहोवा के समुद्र को नियंत्रित करने और पानी को हराने और अराजकता की ताकतों को वश में करने के विचार और इस कल्पना को लेती है और इन चीजों को ऐतिहासिक बनाती है।

अराजकता की ताकतें सिर्फ प्रकृति की ताकतें नहीं हैं जिन्हें यहोवा ने सृष्टि के समय नियंत्रित किया था। अराजकता की ताकतें दुष्ट राष्ट्र भी हैं। इसलिए, परमेश्वर ने निर्गमन के समय अराजकता के पानी को हराया, मिस्रियों को हराया और अपने लोगों को बचाया।

पुराने नियम की आशा यह है कि परमेश्वर अंततः अराजकता की सभी शक्तियों को हरा देगा। हबकूक की प्रार्थना और इच्छा यह है कि जिस तरह से परमेश्वर ने सृष्टि और निर्गमन के समय अराजकता की बुरी शक्तियों को परास्त किया था, उसी तरह जैसे बेबीलोन का संकट सामने आता है, परमेश्वर अंततः योद्धा होगा जो अपने लोगों की ओर से लड़ेगा और उन्हें भविष्य में बुराई की शक्तियों से बचाएगा। इसलिए यशायाह 27.1 में, उस समय की प्रतीक्षा करते हुए जब परमेश्वर अंततः सभी बुराई को हरा देगा और नष्ट कर देगा, यशायाह कहता है, उस दिन प्रभु

अपनी कठोर और बड़ी और मजबूत तलवार से भागने वाले सांप लेवीयतान को, टेढ़े-मेढ़े सांप लेवीयतान को दण्ड देगा, और वह समुद्र में रहने वाले अजगर को मार डालेगा।

प्रभु अपने और अपने लोगों, इस्राएल के सभी शत्रुओं को पराजित करेगा। प्रभु उन शत्रु राष्ट्रों को पराजित करेगा जिन्होंने इस्राएल के लोगों पर अत्याचार किया, उन्हें गुलाम बनाया, पराजित किया और निर्वासित किया। इसलिए राष्ट्रों की तुलना समुद्र में रहने वाले अजगर, लेविथान से की गई है।

यशायाह अध्याय 51, श्लोक 9 और 10, भी परमेश्वर के कार्य करने और अपने लोगों को निर्वासन से बाहर निकालने के लिए एक वादा और प्रार्थना है जिस तरह से उसने निर्गमन के समय कार्य किया था। हे प्रभु, जाग और जाग, बल धारण कर, हे प्रभु की भुजा, पुराने दिनों की तरह जाग, बहुत पहले की पीढ़ी। क्या यह तुम नहीं थे जिसने राहाब को टुकड़े-टुकड़े किया और अजगर को छेदा? क्या यह तुम नहीं थे जिसने समुद्र को, महान गहरे पानी को सुखा दिया, जिसने छुड़ाए गए लोगों के पार जाने के लिए समुद्र की गहराई को दूर कर दिया? प्रभु, हम जानते हैं कि आपने अतीत में क्या किया है।

तुमने अराजकता की ताकतों को हराया। तुमने समुद्र को विभाजित किया। तुमने उसे विभाजित किया।

आपने लोगों को आगे बढ़ने का रास्ता दिया। हबक्कूक परमेश्वर से भविष्य में भी ऐसा ही करने के लिए कह रहा है। पुराने नियम में यह आशा और यह वादा है।

परमेश्वर का विरोध करने वाली सभी ताकतें, उन पर हमला करने वाले सभी दुश्मन राष्ट्र, परमेश्वर अंततः उन्हें हरा देंगे और उन्हें बचा लेंगे। उसी के आधार पर और उसी तरह के आत्मविश्वास के साथ, हबक्कूक इस विशेष अंश में इसी बारे में बात कर रहा है। अध्याय तीन, श्लोक 11 में, सूर्य और चंद्रमा आपके तीरों की रोशनी में अपने स्थान पर स्थिर हो गए जब वे तेजी से आगे बढ़ रहे थे।

परमेश्वर की महानता के कारण सूर्य और चंद्रमा भी भय और पक्षाघात में जम जाते हैं। हम यहाँ यहोशू अध्याय 10 में उस दिन का संदर्भ याद कर सकते हैं जब सूर्य स्थिर हो गया था और परमेश्वर ने एक बड़ा तूफान भेजा और इस्राएल के शत्रुओं को पराजित किया। इस बीच, हबक्कूक का मानना है कि परमेश्वर अंततः अपने लोगों को बचाएगा।

और इसलिए, इस आपदा के अंत में, जब वह इस आपदा से गुज़र रहा है, तो विश्वास की यह अविश्वसनीय अभिव्यक्ति है और शायद यह विश्वास और प्रभु में भरोसे के सबसे महान कथनों में से एक है जिसे मैं कहीं भी पढ़ सकता हूँ। हबक्कूक कहता है कि भले ही अंजीर के पेड़ में फूल न लगें, न ही पेड़ों पर फल लगें, जैतून की उपज खत्म हो जाए, और खेत में भोजन न हो। झुंड बाड़े से अलग हो जाए, और खलिहानों में कोई झुंड न हो।

दूसरे शब्दों में, यदि हम उन सभी आशीषों को खो देते हैं जिन्हें परमेश्वर ने हमें वादा किए गए देश में रहने वाले वाचा के लोगों के रूप में देने का वादा किया था, यदि हमारे पास फसलें नहीं हैं, यदि हमारे पास दाखलताएँ नहीं हैं, यदि हमारे पास शराब नहीं है, यदि हमारे पास अनाज नहीं है, यदि

हमारे पास तेल नहीं है, यदि हमारे पास पशुधन नहीं है, यदि हम बेबीलोन के संकट में यह सब खो देते हैं, और यही वास्तव में होने वाला है, तो वह यह कहता है, फिर भी मैं यहोवा में आनन्दित रहूँगा, और मैं अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर में आनन्दित रहूँगा। परमेश्वर यहोवा मेरी शक्ति है। वह मेरे पैरों को हिरणों के समान बनाता है, और वह मुझे ऊँचे स्थानों पर चलने देता है।

हबक्कूक कहता है, परमेश्वर ने मुझे अपनी योजना बताई है। परमेश्वर ने मुझे बताया है कि वह क्या करने की योजना बना रहा है। परमेश्वर हमें तबाह करने के लिए बेबीलोन की सेना को लाने जा रहा है।

अगर हम सब कुछ खो देते हैं, तब भी मैं परमेश्वर पर भरोसा रखूँगा, और मैं उस पर भरोसा रखूँगा कि वह अपने वादे पूरे करेगा। अब हम अक्सर कह सकते हैं, अगर सब कुछ योजना के अनुसार होता है और अगर परमेश्वर मुझे आशीर्वाद देता है और मैं समृद्ध होता हूँ और जीवन में सब कुछ ठीक चलता है, तो मुझे पता है कि परमेश्वर मेरी देखभाल कर रहा है और परमेश्वर मेरा ख्याल रख रहा है। हबक्कूक कहता है, भले ही विपत्ति आए, मैं प्रभु पर भरोसा रखूँगा।

इसलिए, हबक्कूक इस विचार और सिद्धांत का एक उदाहरण बन जाता है जो हबक्कूक अध्याय दो, पद चार में हमारे लिए प्रस्तुत किया गया है: देखो, धर्मी लोग विश्वास से जीवित रहेंगे। हबक्कूक की तरह, वे परमेश्वर द्वारा अपने वादों को पूरा करने की प्रतीक्षा करेंगे। अब, मैं इस पद को एक मिनट के लिए देखना चाहता हूँ, और फिर मैं चाहता हूँ कि हम इस बारे में सोचें कि इसका उपयोग और अनुप्रयोग नए नियम में कैसे किया जाता है।

धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। धर्मी जन अपने विश्वास से जीवित रहेगा। ईएसवी में इसका अनुवाद इसी तरह किया गया है।

ईएसवी में जिस शब्द का अनुवाद विश्वास के रूप में किया गया है, वह वास्तव में एमुनाह शब्द है। और इस शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है, केवल विश्वास के बजाय, मुझे लगता है कि इसका अनुवाद करने का एक बेहतर तरीका यह है कि धर्मी अपनी वफ़ादारी से जीवित रहेगा। यह शब्द ईमानदारी, विश्वसनीयता, ईमानदारी और वफ़ादारी के बारे में बात कर रहा है।

यह परमेश्वर का एक गुण है जो व्यवस्थाविवरण 32:4, भजन 36:5 और कई अन्य स्थानों पर वर्णित है। परमेश्वर विश्वासयोग्य है। आप इस पर भरोसा कर सकते हैं, लेकिन यह मनुष्य का भी एक गुण है।

तो, हम यहां जिस बारे में बात कर रहे हैं वह केवल विश्वास नहीं है, न ही केवल भरोसा है, बल्कि एक जीवनशैली है जो उस भरोसे से विकसित होती है।

तो यहाँ विचार यह है कि परमेश्वर ने एक वादा किया है। अंततः, वह अपने लोगों को बचाएगा और उनका उद्धार करेगा। और इस सारी आपदा के बीच, परमेश्वर अपने उद्देश्यों को पूरा कर रहा है।

अंततः, हम उस पर भरोसा कर सकते हैं और जो व्यक्ति परमेश्वर पर भरोसा करता है, वह परमेश्वर के प्रति वफ़ादारी और आज्ञाकारिता में रहेगा और उस समय की प्रतीक्षा करेगा जब

परमेश्वर अंततः उस उद्धार को लाएगा। अब, यहाँ एक भिन्नता है। कुछ लोगों ने देखा है कि धर्मी व्यक्ति अपने विश्वास से जीवित रहेगा, और उन्होंने उसे परमेश्वर के संदर्भ के रूप में देखा है।

वास्तव में, सेप्टुआजेंट में, प्रभु कहते हैं, धर्मी लोग मेरी वफ़ादारी से जीवित रहेंगे। तो यहाँ एक मुद्दा है। क्या यह ईश्वर की वफ़ादारी है या धर्मी व्यक्ति की वफ़ादारी? हालाँकि, धर्मी सबसे निकटतम पूर्ववर्ती है और शायद यहाँ जिस बारे में हम बात कर रहे हैं उसके लिए सबसे संभावित व्याख्या या सबसे संभावित संदर्भ प्रतीत होता है।

उनका विश्वास ईश्वर के नहीं, बल्कि धर्मी व्यक्ति के विश्वास के बारे में बात कर रहा है। अन्य लोगों ने यहाँ तीसरे व्यक्ति के प्रत्यय को वादे की ईमानदारी के संदर्भ में देखा है। लेकिन फिर से, निकटतम पूर्ववर्ती, और मुझे लगता है कि इसका सबसे स्वाभाविक अर्थ यह है कि धर्मी लोग विश्वास से जीएँगे, और वे अपनी वफ़ादारी से जीएँगे, और वे सही तरह का जीवन जीकर अंततः अपने वादों को पूरा करने के लिए ईश्वर पर अपना भरोसा प्रदर्शित करेंगे।

अब, इस अंश का इस्तेमाल नए नियम में तीन अलग-अलग बार किया गया है। इब्रानियों की पुस्तक में इनमें से एक अंश ऐसा है जहाँ ऐसा लगता है कि लेखक इसका इस्तेमाल इस तरह से कर रहा है जो लगभग बिल्कुल उसी तरह से मेल खाता है जिस तरह से इसका इस्तेमाल हबक्कूक की पुस्तक में किया जा रहा है। अध्याय 10 में, मुझे खेद है, मैं अध्याय 11 में देख रहा था क्योंकि यह विश्वास का अध्याय है।

लेकिन इब्रानियों के अध्याय 10 में हबक्कूक 2 का संदर्भ है, और यह कहता है, " अभी थोड़ी देर में, और आनेवाला आएगा और देर न करेगा, परन्तु मेरा धर्मी जन विश्वास से जीवित रहेगा। और यदि वह पीछे हट जाए, तो मेरा मन उससे प्रसन्न नहीं होगा। धर्मी व्यक्ति परमेश्वर पर भरोसा करेगा और उत्पीड़न के बीच में, उस तरह का जीवन जीएगा, उस तरह की वफ़ादारी प्रदर्शित करेगा जो उस तरह के व्यक्ति को प्रतिबिंबित करती है, और पीछे नहीं हटेगा।

हबक्कूक बिल्कुल यही कह रहा है। लेकिन रोमियों की पुस्तक में पॉल के पत्रों में, रोमियों की पुस्तक में और गलातियों को लिखे पत्र में भी इस अंश का एक दिलचस्प उपयोग है, जहाँ पॉल इस आयत का उपयोग कानून के कामों को बनाए रखने के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के बजाय विश्वास से धर्मी ठहराए जाने के बीच के अंतर के बारे में बात करने के लिए करता है। और इसलिए, हमने सवाल पूछा, ठीक है, हमने अभी जो बात की है, उसके प्रकाश में, पॉल हबक्कूक अध्याय दो, आयत चार का उपयोग कैसे कर सकता है, और धर्मी उसकी वफ़ादारी से जीवित रहेगा? वह उस अंतर को बनाने के लिए इसका उपयोग कैसे कर सकता है? मुझे लगता है कि हमें यहाँ जो समझना है उसका एक हिस्सा यह है कि पॉल हबक्कूक अध्याय दो के वादे को पढ़ रहा है और वह इसे एक युगांतिक तरीके से पढ़ रहा है।

क्योंकि हबक्कूक 2 में व्यक्ति क्या है? वे किस बात का इंतज़ार कर रहे हैं? वे परमेश्वर के अंतिम उद्धार का इंतज़ार कर रहे हैं। वे उस बात का इंतज़ार कर रहे हैं जिसका वर्णन अध्याय तीन, श्लोक 12 से 13 में किया गया है जब परमेश्वर लोगों को बेबीलोनियों से छुड़ाएगा और उन्हें पूरी तरह से पुनर्स्थापित करेगा। एक अर्थ में, जैसे ही हम रोमियों की पुस्तक और गलातियों की

पुस्तक में आते हैं, हम नए नियम और यीशु के आगमन पर आते हैं, हम अभी भी उस वादे की अंतिम पूर्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

पॉल हबक्कूक के वादे को एक युगांतिक तरीके से पढ़ता है। ऐसा करने वाला पॉल अकेला व्यक्ति नहीं था। कुमरान के एक पाठ में जो हबक्कूक की पुस्तक पर एक टिप्पणी प्रदान करता है, हबक्कूक 2:4 पर कुमरान से पेशर, इसे युगांतिक उद्धार के संदर्भ में भी देखता है जिसे परमेश्वर अपने लोगों के लिए लाने जा रहा है।

और हबक्कूक 2:4 पर कुमरान के पेशर में कहा गया है, क्योंकि परमेश्वर द्वारा निर्धारित सभी समय उसके नियत समय के अनुसार ही पूरे होंगे। इसलिए, 2:4 में परमेश्वर ने जो उद्धार का वादा किया था, वह अभी भी अपने रास्ते पर है। हम उसके आने का इंतज़ार कर रहे हैं।

कुमरान के समुदाय ने परमेश्वर द्वारा शत्रु सेना को पराजित करने के वादों को देखा। उन्होंने इसे बेबीलोनियों के संदर्भ के रूप में नहीं देखा। उन्होंने इसे कित्तिम, पश्चिमी लोगों और रोमनों के संदर्भ के रूप में व्याख्यायित किया। और इसलिए उन्होंने यहाँ दिए जा रहे युगांतिक वादे को इस रूप में देखा कि परमेश्वर अंततः अपने शत्रुओं को पराजित करेगा।

वह इस्राएल के लोगों को पुनर्स्थापित करेगा। बेबीलोन के संकट में जो कुछ भी पूरी तरह से नहीं किया गया था, वह अंततः पूरा होगा। इसलिए, दूसरे शब्दों में, धर्मी लोग अभी भी विश्वास से और अभी भी अंतिम उद्धार के वादे के लिए ईमानदारी से प्रतीक्षा कर रहे थे।

यीशु के प्रकाश में और नए नियम में आए नए रहस्योद्घाटन और मसीह में परमेश्वर ने जो किया है, उसके प्रकाश में, पौलुस अब हबक्कूक की पुस्तक में पाए जाने वाले वादे को समझता है और उसे और अधिक स्पष्ट करता है। वादा सिर्फ यह नहीं है कि परमेश्वर बेबीलोनियों से इस्राएल को छुड़ाने जा रहा है। वादा यह है कि परमेश्वर, यीशु के माध्यम से और यीशु ने क्रूस पर जो किया है, उसके माध्यम से अंततः पुनर्स्थापना और मुक्ति लाएगा।

कुमरान के लोग उस मुक्ति की तलाश में थे। पॉल हमें यह समझने में मदद करता है कि यह अंततः कहाँ से आता है। यह मसीह से आता है।

और इसलिए अब हबक्कूक, जिस तरह से उसने परमेश्वर के वादे पर विश्वास करके प्रतीक्षा की, और उसने विश्वासयोग्यता से परमेश्वर के वादे का इंतज़ार किया कि वह अंततः इस्राएल को बेबीलोनियों से छुड़ाएगा। जो लोग यीशु को जानते हैं वे विश्वास से जीते हैं क्योंकि वे यीशु पर भरोसा करते हैं कि वही वह है जो उस मुक्ति को प्रदान करता है। और रहस्योद्घाटन की प्रगति में, विश्वासयोग्यता का ध्यान अब तोराह का पालन करना और कानून के आदेशों का पालन करना नहीं है।

यह यीशु पर भरोसा करना है और क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से उनके द्वारा प्रदान किए गए उद्धार और परमेश्वर के लोगों के लिए औचित्य है जो परमेश्वर की धार्मिकता के कारण विश्वास द्वारा उपलब्ध है। इसलिए, एक अर्थ में, पौलुस हबक्कूक का अर्थ नहीं बदल रहा है। वह इसे

अधिक केंद्रित और सूचित तरीके से पढ़ रहा है क्योंकि वह परमेश्वर के अंतिम उद्धार को समझता है।

पुराने नियम में विश्वास की सबसे बड़ी गवाही और स्वीकारोक्ति हबक्कूक की पुस्तक में पाई जाती है। और इस आपदा के बीच, हबक्कूक उन लोगों का एक आदर्श है जो परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को अंततः मुक्ति दिलाने के लिए वफ़ादारी से प्रतीक्षा करेंगे। और आज परमेश्वर के लोगों के रूप में, जैसा कि हम मसीह के प्रकाश में इस अंश को समझते हैं, हम उसी तरह का जीवन जीते हैं।

हम उसी तरह की वफ़ादारी जीते हैं, उसका उदाहरण देते हैं और उसका उदाहरण देते हैं, जब हम परमेश्वर के वाचाबद्ध लोगों के लिए पुनर्स्थापना के वादों की अंतिम और अंतिम पूर्ति की प्रतीक्षा करते हैं।

यह डॉ. गैरी येट्स की पुस्तक 12 पर उनके व्याख्यान श्रृंखला में है। यह हबक्कूक की पुस्तक पर व्याख्यान 25 है।